# अध्याय-२

# संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

# अध्याय द्वितीय

# संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

## 2.1 प्रस्तावाना

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है, क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तको ज्ञान कोषो पत्र–पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। उसके अभाव में उचित दिशा से अनुसंधान को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है जब तक उसे क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो इस दिशा में सफल हो सकता है और नहीं आगे बढ़ सकता है।

## 2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है। वह पुनः किया जा सकता है।

- ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यकता है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात है कि ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है।

- पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अतः दृष्टि प्राप्त हो सकती है।
- पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
- सत्यापन करने के लिए अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

## 2.3 शोध संबंधी अध्ययन

- शाह (1981) Conducted a study to develop and try out programed material mathematics for student of class 5th. इस अध्ययन का उद्देश्यः- कक्षा 5वी गणित के विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम के विभिन्न ईकाइयों में प्रोग्राम मटेरियल का विकास करना एवं चयनित स्कूलों से कक्षा 5वी के कुछ बच्चों का परीक्षण कराया। अध्यन में पाया गया किन प्रोग्राम मटेरियल से चयनित इकाईयों का शिक्षण प्रभावी रहा एवं विद्यार्थियों एवं शिक्षको द्वारा प्रोग्राम मटेरियल कि प्रतिक्रिया सराहनीय रही।

- ह्मस (1983) द्वारा SPLP (Symbol picture logic programmed) या तार्किक सांकेतिक चित्र कार्यक्रम पद्धत्ति उपागम द्वारा गणित की उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य SPLP द्वारा गणित मूलभूत तार्किक सांकेतिक का विकास करना एवं SPLP द्वारा गणित उपलब्धि पर प्रभव का अध्ययन करना एवं SPLP द्वारा तार्किक सांकेतिक योग्यता के प्रभाव का अध्ययन करना रहा। अध्ययन में पाया गया कि SPLP द्वारा नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रयोगात्मक समूह की गणित उपलब्धि बहुत अच्छी रही एवं उच्च बुद्धि लब्धि वाले विद्यार्थीयों का SPLP द्वारा अधिक फायदा हुआ तथा निम्न बुद्धिलब्धि विद्यार्थियों की उपलब्धि में भी विकास हुआ।

- **रामन, जे, (1989)** द्वारा विद्यार्थियों में गणित कैल्कुलस में आने वाली सामान्य त्रुटियों की पहचान करना एवं इसका उपचार करना पड़ा शोध किया। अध्ययन में पाया गया कि प्रयोग समूह के विद्यार्थियों की उपलब्धि में अंतर पाया गया है। कैल्कुलस में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों को कम करने में उपचारात्मक शिक्षण प्रभावी होता है। इस अध्ययन में केल्कुल्स की त्रुटियों की पहचान कर प्रयोगात्मक समूह को उपचारात्मक शिक्षण दिया। जिसमें उनकी उपलब्धि बढ़ी।

- **भाटिया, कुसम (1992),** अभिक्रमित अनुदेशन द्वारा भिन्न गणित सीखने में कठिनाई की पहचान करना तथा उसका उपचार करना।इस अध्ययन का उद्देश्य कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भिन्न उपविषय हेतु निर्देशात्मक सामग्री उपचारात्मक शिक्षण उपकरण में प्रयुक्त करना तथा परम्परागत शिक्षण विधि एवं उपचारात्मक शिक्षण विधि के द्वारा शिक्षण विद्यार्थियों की उपलब्धि में होने वाले अंतर की सार्थकता का परीक्षण करना था। इस अध्ययन हेतु कक्षा 5वी के 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया प्रदत्तो के संकलन हेतु एवं मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन में उपचारात्मक शिक्षण द्वारा शिक्षण कराना प्रभावी पाया गया।

- **राखो (2004)** द्वारा 5वी के विद्यार्थियों की गणित विषय के लिए निर्धारित दक्षता में उपलब्धि पर उपचारात्मक शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया गया। जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि प्रयोगात्मक समूह को उपचारात्मक शिक्षण दिया जाए, तो उसका प्रभाव उपलब्धि पर पड़ता है।

- **सतीश (2011)** द्वारा मध्यप्रदेश के कक्षा 7वी के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि तथा तार्किक योग्यता पर रचनावाद उपागम करके

प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन के उद्देश्य रचनावाद उपागम की प्रभाविकता का अध्ययन करना। कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर लिंग व उपागम से अंत क्रिया का अध्ययन करना एवं कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता पर लिंग व उपागम के अन्तः क्रिया का अध्ययन करना। अध्ययन में पाया गया कि कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर उपागम का सार्थक प्रभाव पाया गया; कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि प्रभाव पाया गया; कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों की गणित, उपलब्धि पर उपागम एवं लिंग व अन्तः क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया एवं कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों के तार्किक योग्यता पर उपागम का कोई सार्थक प्रभाव पाया गया कक्षा 7वीं के विद्यार्थियों की तार्किक योग्यता का लिंग पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

- **मकवाणा (2007),** द्वारा रचनात्मक उपागम द्वारा कक्षा 5वीं के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धिा पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5वी के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर प्रभाव का सार्थक अंतर नहीं होगा एवं रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5वी के छात्रा एवं छात्रों की गणित उपलब्धि पर प्रभाव का सार्थक अंतर नहीं होगा। अध्ययन में पाया गया कि रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5वी के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि पर सार्थक पाया गया एवं रचनावाद उपागम द्वारा कक्षा 5वी के छात्र एवं छात्राओं को गणित उपलब्धि पर प्रभाव पाया गया।

  यह अध्यन रचनावाद उपागम पर हुआ है। जिसमें इस उपागम से बालको के अधिगम में बहुत सहायता करता है। उनके ज्ञान में वृद्धि होती है तथा वे ज्ञान की रचना करना सीखते है

- **Nessal kimberly L (2004-05),** using constructivist approach on std.XII to study basic skills of mathematics findings revealed that it in creased student's marks and motivation.

- **Nayak Dr. Rajendra Kumar (2007),** has done "A study on effect of constructivist pedagogy on students achievement in mathematics at elementory level" objective of the study were. a. The study the effect of constructivist (CA) on learing achiverment in mathematics of elementary school children. b.To examine the different dimensions. (S) of achivement in mathematics of elementary school children. The main contribution of this study provided the empirical evidences to shoco that the student's learing in constructivist approach dief have some impact on students performance 'in mathematics in terms of their understanding and applicablity and student are able to integrate their learnt concept knowledge.